नफरत की आग

कहते है खुद को हिन्दू और मुसलमान हम, अरे वो जानवर भी है हमसे अच्छा रहा।
क्या मिल जाएगा उस मन्दिर, मस्जिद को खड़ा कर, जो लाशों के ढेर पर बना हुआ।।
जला रहे आज जिंदा लोगों को, नफरत की आग में आज इन्सानियत है जल रही।
हो रहे बच्चे अनाथ, औरतें विधवा, कितनी ही माताओं की है गोद आज उजड़ रही।।
हर तरफ भूखमरी, हर तरफ तबाही, हर तरफ खून की नदियां आज बह रही।
खरीद रहे है खंजर और बंदूक हम, पर भूखे को खिलाने के लिए न रोटी रही।।
रोता होगा वो खुदा, वो भगवान आज, राम और अल्लाह के नाम पर जंग हो रही।
जीत हुई न हिन्दू की, न मुसलमान की, बस हार है आज इन्सानियत की हो रही।।
देखते है तमाशा बैठ अपने घरों में, बाहर न जाने कितने मासूम बच्चे, औरतें जल गई।
बंद हो गए चूल्हे कितने ही घरों के, जहाँ माँ अब भी अपने बच्चों का रास्ता तक रही।।
न देखता कोई जाकर उन मासूमों को, रो– रोकर जिनकी आँखे भी है आज सूख गई।
न लगाता कोई मरहम उन बेबसों के जख्मों कर, जिनकी हर उम्मीद है आज टूट गई।।
अरे क्या फायदा उस हिन्दू या मुस्लिम होने का, जहाँ न है दया,
जहाँ धर्म के नाम पर इतना सब कुछ होता है।
अरे अच्छा हूँ मैं एक इन्सान ही, जिसके दिल में खुदा रहता है,
जो देखकर दूसरे का दर्द आज भी रो देता है।।